FAIRS IN INDIA: NAUCHANDI & GARH-GANGA

भारत में मेले: नौचन्दी व गढ़मुक्तेश्वर-गंगा मेला

FAIRS IN INDIA

मानव जीवन में मेलों का बड़ा योगदान है। ये मेले, ये त्योहार, येरस्में-रीतियाँ-रिवाज न होते तो हमारा जीवन उदासीन होता। अनेक धार्मिक मेले ऐतिहासिक रूप से मनाये जाते हैं जैसे पंजाब में बैसाखी के मेले, दिल्ली में फूल वालों की सैर, उत्तर प्रदेश में बसन्त का मेला, हिमाचल में कुल्लू का दशहरा, राजस्थान में पुष्कर का मेला, हर की पैड़ी का मेला (हरिद्वार) नौचन्दी का मेला (मेरठ) गंगा-मेला (गढ़मुक्तेश्वर) ख़्वाजा का उर्स-मेला (अजमेर) कुंभ मेला (संगम-प्रयाग), पतंग-उत्सव (अहमदाबाद) डांडिया (गुजरात) बिहु (असम), दुर्गा-मेला (बंगाल) छठ मेला (बिहार), जाली कट्टू (तमिलनाडु) दशहरा में रामलीला के मेले, जन्माष्टमी के मेले, सोनपुर का पशु मेला, चन्द्र भागा माघ मेला (उड़ीसा) चम्पाकुलम स्नेक बोट मेला (अलेप्पी) मुहर्रम के मेले, सूरजकुंड हस्तशिल्प मेला तथा स्थानीय नुमाइश के मेले हैं। मेले न हों तो मानव जीवन नीरस हो जायेगा। पूरी दुनिया में प्राचीन काल से अनेक अवसरों पर कुछ ख़ास मेलों का आयोजन होता आया है।

नौचन्दी-मेला:

NAUCHANDI FAIR

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में प्रश्न पूछा जाता था कि किसी मेले पर निबंध लिखिये या मेले का आँखों देखा लेखन लिखिये, तभी से नौचन्दी के मेले का वर्णन पढ़ते थे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर के बीचो बीच ये प्रसिद्ध मेला लगता है जिसमें शामिल होने के लिये देश भर के दूकानदारों को प्रतीक्षा रहती है। दूर-दूर से तरह तरह के सामानों के विक्रेताओं के साथ खेल-तमाशे वाले, जादूगर, सर्कस, मिनी चिड़िया घर, तरह-तरह के झूले (राइड्स) मौत का कुँआ, नाना प्रकार के व्यंजन, होटल, खिलौने और नयी-नयी यादगार चीज़ें आती हैं; रोज़-रोज़ पाण्डाल में सांस्कृतिक नाच-गाने-नौटंकी, नाटक, सम्मेलन व प्रतियोगिताएँ भी आयोजित होती हैं। हज़ारों पर्यटक आस-पास के नगरों से रात भर आते हैं; जगमगाती रोशनियों तथा गूँजते ढोल-बाजों से पूरा वातावरण उत्सवमय होता है। किशोर व युवा पर्यटक सर्वाधिक आनन्द लेते हैं; जमकर ख़रीददारी भी लोग करते हैं। इतने विशाल क्षेत्र में ये मेला फैल जाता है कि लोग सारी रात घूमते-देखते, खाते-पीते, खेलते, ख़रीदते मनोरंजन करते हैं।

नौचंदी के मेलाक्षेत्र में एक नौचंदी (चण्डी माँ) का मंदिर है, वहीं पास में बाले मियाँ की मज़ार है। लगभग एक माह तक चलने वाले इस मेले को क़ौमी-एकता की मिसाल कहा जाता है। होली के बाद एक रविवार छोड़कर दूसरे रविवार से शुरू होता है। नौचंदी देवी और बाले मियाँ की मज़ार पर बड़ी संख्या में हर समुदाय के लोग उत्साहपूर्वक दर्शन करके मेले की शुरुआत करते हैं। 1883 में तत्कालीन कलक्टर एफ़. एन. राइट ने दरगाह और माता-मंदिर को क़ौमी एकता के रूप में देख कर मेले को सरकारी मान्यता दी। दरगाह पे होने वाले उर्स को मेले के रूप में बदल दिया जो कालान्तर में पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण बना।

कहा जाता है कि लगभग डेढ़ सौ साल पहले सर सीताराम पत्थरवालों के पिता

NAUCHANDI-FAIR

इस मंदिर के पंडित चण्डी प्रसाद के पूर्वज इसकी देखभाल करते थे। कहावत है कि इसका कोई संबन्ध रावण की रानी मन्दोदरी से भी था; एक बार यह मंदिर खण्डित भी हुआ, मराठा-हमले के समय जयपुर के कारीगरों से इसकी मरम्मत करायी गयी; नवरात्रों में यहाँ माँ की पूजा भी होती है।

हेरात से आने वाले सैयद मोहिउद्दीन सालार साहू ग़ाज़ी और सैयद सिराजुद्दीन 'टाटपोश' दर्वेश 405 हि० में भारत आये; हज़रत साहू के यहां 1015 ई० में सैयद मसूद सालार ग़ाज़ी उर्फ़ बाले मियाँ का जन्म हुआ जिन्होने मात्र 10 वर्ष की आयु में ही शिक्षा पूर्ण करली; 1033 ई० में दर्वेश 'टाटपोश' के साथ भाईचारे का संदेश लेकर यहाँ आये; इसी मध्य दर्वेश टाटपोश की मृत्यु हो गयी। ग़ज़नवी के हमले में मारकाट से विरक्त होकर सिपहसालार मसूद ग़ाज़ी फ़कीर बन गये; 1194 में कुतबुद्दीन ऐबक ने बाले मियाँ का मक़बरा बनवाया। वक्फ़ बोर्ड के अभिलेखों के अनुसार बादशाह आलम II ने 1089 में इस भूमि को लगान मुक्त किया था। वक्फ़ बोर्ड के पास सुरक्षित शाही फ़रमान के मुताबिक़ यहाँ के जागीरदार ख़िज़्र आलम चिश्ती की दरख़्वास्त कि वक्फ़ अलल ख़ैर करके इसकी मिल्कियत अल्लाह क़रार दी है; ये मज़ार, मस्जिद, ईदगाह, क़ब्रिस्तान ज़ेरे-ग़रीबाँ हैं, इसका इस्तमाल सिर्फ़ मुरदे के लिये होता है; आमदनी का कोई ज़रिया नहीं, इसलिए इसकी लगान माफ़ी की जाय। बादशाह ने हुक्म दिया कि इसे माफ़ी अवाम लाख़िराजी दर्ज करें। 1034 में बाले मियाँ की मज़ार बनीं जिसे 1194 में ऐबक ने पुनर्निर्माण कराया जिसके स्थापत्य में प्याज़नुमा (बल्बस) गुम्बद से ढका गया। पर्यटकों को इसकी वास्तुकला आकृष्ट करती है।

NAUCHANDI FAIR

मेरठ नगर महापालिका द्वारा आयोजित होने वाले मेले में 50,000 से अधिक पर्यटक आते हैं; इस मेले के नाम से भारतीय रेलवे मेरठ से लखनऊ तक 'नौचन्दी एक्सप्रेस' भी चलाती है। इसकी शुरुआत 1672 में पशु मेले के रूप में हुई थी; 1858 में पिछली ग़दर के नाते यह नहीं हुई; तभी से इसका स्वरूप भी बदल गया। अभी 2020 में भी इसे 'कोरोना' महामारी के नाते स्थगित किया गया है। इस मेले में अनेक पर्यटक-उत्पाद भिन्न संस्कृतियों से परिचित करवाते हैं। यहाँ लखनऊ की चिकन, मुरादाबादी बर्तन, भदोही के क़ालीन, बनारसी साड़ियाँ, आगरा की जूतियाँ, मेरठ की गज़क व नान-ख़ताई के साथ पूर्व में अरबी घोड़े भी बिकने आते थे; सेना के घोड़ों की ख़रीद यहाँ होती थी। साढ़े तीन सौ साल पहले एक दिवसीय मेले ने आज विराट स्वरूप ग्रहण कर लिया है। नौचंदी मेले ने देश को साम्प्रदायिक सद्भाव का नज़ारा दिया है।

गढ़मुक्तेश्वर का गंगा मेला:

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हापुड़ (नवनिर्मित) ज़िले की नगर पालिका गढ़मुक्तेश्वर की जनसंख्या लगभग ढाई लाख है, यह राष्ट्रीय राजमार्ग से राजधानी को जोड़ता है। गंगाघाट नगर से लगभग 5 किमी० है। इस प्राचीन स्थान का उल्लेख 'भागवत पुराण' व 'महाभारत' में भी आया है। कहा जाता है कि यह कभी हस्तिनापुर का अंग था। इसकी पुरानी गढ़ी का पुनरुद्धार मराठा मीर भावों ने कराया था, जिसे बाद में अंग्रेज़ों ने तहसील मुख्यालय बना दिया। गंगा मइया को समर्पित मुक्तेश्वर महादेव के मंदिर के नाम से इस स्थान को जाना गया जहाँ चार मंदिर हैं। नगर में 80 सती-स्तम्भ हैं, जहाँ विधवाएँ सती हुई थीं। इसी नगरी में 682 हि०

— 3

GANGA-FAIR

सन् 1283 के अरबी शिलालेख से युक्त सुल्तान ग़यासुद्दीन बलबन द्वारा निर्मित
एक मस्जिद भी है। विभाजन के समय यहाँ भीषण रक्तपात भी हुआ था।
नगर से तीन मील की दूरी पर लगे मेले में लगभग 7 लाख लोग रहे होंगे
जिसमें काफ़ी दूकानदार मारे गये। इतिहासकार ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ने लिखा है
कि मेले में लूट भी मच गयी थी। कलकत्ता की हिंसा की प्रतिक्रिया में यहाँ
दंगा मचा था। यह एक दुखद स्मृति है।
प्राचीन गंगा मंदिर में नदी तक उतरने के लिए कभी 100 सीढ़ियाँ थीं जिनमें
से 85 अभी भी सुरक्षित हैं। दूर दूर से पर्यटक गंगा मंदिर, ब्रह्मा के श्वेत
बलुवे मूर्ति के दर्शनार्थ आते हैं। गढ़ में मुक्तेश्वर महादेव का शिव मंदिर
है; कहा जाता है कि परशुराम ने यहाँ शिव लिंग स्थापित किया था। नहुश-कूप
में गंगा का पानी आता है; कहा जाता है कि राजा नहुश ने यहाँ यज्ञ किया था।
मुक्तेश्वर मंदिर के ठीक सामने 'मीरा बाई की रेती' पर्यटक-आकर्षण का केन्द्र है,
यह एक रेतीली फैली जगह है जहाँ किंवदन्तियों के अनुसार मीराबाई रुकी
थीं और पूजा करती थीं। बृजघाट पर वेदांत मंदिर, हनुमान मंदिर, अमृत
परिसर जैसे मंदिर हैं। महाभारत काल का मध्य गंगा नहर रोड, झड़ीना गाँव
में भी एक सिद्धनाथ बाबा शिव मंदिर है। यहाँ दो रेलवे स्टेशन हैं: गढ़मुक्तेश्वर
तथा बृजघाट।
गंगा-जल स्नान के लिए प्रसिद्ध इस पर्यटन केन्द्र पर कार्तिक पूर्णिमा के दिन हर
वर्ष विशाल मेले का आयोजन होता है; आस्था की परंपरा का ये नहान-मेला
बड़ी संख्या में पर्यटकों को खींचता है। ज्येष्ठ मास के दशहरा में भी यहाँ
बड़ा नहान-मेला लगता है; पर्यटक मूलतः स्नान के लिए ही आते हैं। यह ऐतिहासिक
मेला ज़िला परिषद द्वारा आयोजित किया जाता है। नगर पालिका द्वारा
पर्यटकों के लिए अनेक व्यवस्थाएँ की जाती हैं; इस मध्य गढ़-गंगा मेला ख़ेमों
की लघु नगरी में दिखायी पड़ता है।

GANGA-FAIR

यहाँ गधे-
यहाँ एक पशु मेला भी लगता है जिसे 'गधों का मेला' कहा जाता है।
खच्चर, घोड़े के स्थानीय व्यापारी तो आते हैं; पड़ोसी देशों तक से ख़रीदार आते हैं।
गढ़-गंगा मेला धार्मिक-पर्यटक प्रबंधन के लिए प्रख्यात है। गंगा के दाहिने तट पर
लगने वाले गंगा मेले के अलावा यहाँ श्राद्ध व तर्पण के लिए भी लोग आते हैं।
आकर्षक गंगा घाट, सम्मोहक सूर्योदय, चाँदनी रात और साँझ के मेले में
लगे खेल तमाशे, झूले, करतब, नाना प्रकार के खानपान, ख़रीद के सामान सभी
धार्मिक पर्यटकों को रिझाते हैं। यहाँ मोक्ष की कामना से आये लोग 'कल्पवृक्ष'
का भी दर्शन करते हैं। गंगा मेले का पर्यटन हमें आस्था के युग में ले जाता है।

मीआज़ाद

मीआज़ाद

मीआज़ाद